प्राचीन वंशावली ५२/५६

दूसरा वंशावली.

महाभारतसे आरंभकर सन ७२० ई० [illegible] वंशसूची (१)

सूर्यवंश- अयोध्या सौराष्ट्र और मेवाडके कुल.

१ रामचन्द्र- रामायणमें इनको जन्मेजयका समसामयिक लिखाहै.

१ लव (२) कुश

२ अतिथि- कूरम वा कछवाह कछवाहोंकी वंशावली अपूर्णथी इससे न लिखी

३ निषध

४ नल वा नभ

५ पुंडरीक

६ मेघधन (क्षेमधन्वा) (क)

७ वल

८ शल (थल)

९ वज्रनाभ

१० सौजन्स (शंखण) (सगुण)

११ ध्युषिताश्व

[illegible]

१३ हिरण्यनाभ (हिरण्यभेर)

१४ पुष्पक (पुष्य) (ख)

१५ सुदर्शन

१६ अग्निवर्ण

१७ शीघ्र

१८ मरु

१९ प्रसुश्रुत

२० संधि

२१ अमर्षण

२२ अवस्थान (सहस्वान)

२३ विश्वबाहु

२४ प्रसेनजित

२५ तक्षक

२६ बृहद्बल

२७ बृहद्रण

२८ उरुक्रिय

[illegible] राजाओंका [illegible] बदलाहै और [illegible] वंशके

३० प्रतिव्याम — इस समयके इतिहासके विरुद्ध उनको [illegible]

३१ भानु (ग) — ही रखदियाहै.

३२ सहदेव

३३ बृहदश्व

३४ बाहुमान (भानुमान) वा बहमन लम्बे हाथोंवाला (३)

३५ प्रतिकाश्व — नोट- यदि नामकी समानताही पथदर्शक समझीजाय तो सूर्य और चंद्रवंशके यह

३६ सुप्रतीक — तीनोकुल सबके सब एकही समयमें ताक तक्षक वा तुरुष्क अर्थात् तुर्किस्तानके तुर्कों

३७ मरुदेव — की इस सीथिक जातिनेही निकाल दियेथे यहां यह परिवर्तन २५ वीं पीढीमें दिल्लीवं-

३८ सुनक्षत्र — शकी २८ वीं पीढीमें और विहारवालोंमें २७ वीं पीढीमें हुआ. जयीवंशवालोंमें प्रत्ये-

३९ पुष्कर — क वीरका आना और यदिहम वेंटलेका हेर फेर स्वीकार करलें और बाहुमान वा बहम-

४० अन्तरिक्ष — नको तक्षकके पीछेका माने तो हमें फारिसके एक [illegible] सम्राट्का नाम और वह

४१ सुतपा — समय प्राप्त होगा जिसके विषयमें कहागयाहै [illegible] रतवर्षमें था जिससे काइ-

४२ अमित्रजित — यन वंशका अर्दशीर और यूनानियोंका अर्तजर्क्स [illegible] कहा है तब तो राणाकारवा-

४३ बृहद्राज — न्दान बाहुमानसे निकलनेके कारण ईरानी समझाजायगा जैसा कि बहुतसे ग्रंथकारोंका (मतहै.

४४ बर्हकेतु (नर्हि)

४५ कृतंजय — कृतंजय [illegible] मेवाडकी आख्यायिकाओंमें कोशलसे निर्गत प्रथम राजा सौराष्ट्रमें सूर्य-

४६ रणंजय — [illegible] का स्थापित करनेवाला कहागयाहै.

४७ संजय

४८ शाक्य

४९ शुद्धोद

५० सांगल (लांगल) (हांगल)

इन्द्रप्रस्थ दिल्लीके चंद्र वा इन्दु वंशके कु[illegible] राजावलीसे संग्रहकियेहैं.

१ परीक्षित- युधिष्ठिरके भाई अर्जुनका पोता (५)

२ जनमेजय

३ असमंजस

४ अधन

५ महाजन

६ यशरथ

७ धृतवान

८ उग्रसेन

९ शूरसेन

१० श्रुतसेन

११ रस्मराज

१२ वाचाल

१३ सूतपाल

१४ नरहरदेव

१५ यशरथ

१६ भूपत

१७ सेअवंश [illegible]

१८ मेधावी

१९ श्रवण

२० कीकन

२१ पदरथ

२२ दूसुनभ

२३ अदेलिक

२४ हन्तवर्ण

२५ धुंधुपाल

२६ दूनशाल

२७ सेनपाल

२८ खेमराज- यह राज्य प्रबंधसे सर्वथा अमनस्क [illegible] राजप्रबंधमें गडबड हुई और इसके प्रधाननें इसको मार[illegible] गद्दी ग्रहण करली. और यहां यह पांडुशाखा समाप्त हुई.

[illegible] वंश.

२९ विसर्व. कदाचित यह शेषनागका समकालीन [illegible] सीका समकालीन हो.

३० सूरीन

३१ शीर्ष

३२ अहंगसाल

३३ वैरजित

३४ दुरवर

३५ सोढपाल

३६ शूरसेन

३७ सिंहराज

३८ अमरगोद

३९ अमरपाल

४० सरवहि

४१ पधरत

४२ मदपाल इसके प्रधानने इसको मारडाला राजावली चौदह राजाओंका समय ५०० वर्ष लिखाहै.

तीसरा वंश.

४३ महाराज- कदाचित यह वही महाराजहै जिसका [illegible] तारीख फरिश्तामें आयाहै.

४४ श्रीसेन

मगधराजके चंद्रवंशी राजाओंके कुल.

१ मार्जारी- महाभारतके समकालीन जरासंधका पोता सहदेवका बेटा.

२ सोमापी

३ श्रुतश्रवा

४ अयुतायु

५ निरमित्र

६ सुनक्षत्र

७ बृहतसेन

८ सेनजित् (कर्मजित्)

९ श्रुतंजय

१० चिप्र

११ शुचि

१२ क्षेम्य

१३ सुव्रत (सुन्द्रा.)

१४ धर्मपुत्र

१५ सुश्रम (शम)

१६ दृढसेन (द्युमत्सेन)

[illegible]

१८ सुबल

१९ सुनीथ

२० सत्याजित

२१ विश्वजित्

२२ रिपुंजय चंद्रवंशका पिछला राजा जरासंधका क्रमानुयायी इसके शासन कालमें मगधराजमें बुद्धोंमेंसे एक प्रगट हुआ कदाचित् यह तेईसवां तीर्थंकर चन्द्रप्रभु होगा. (६)

दूसरा वंश.

२३ प्रद्योत- बृहद्रथको उसके अमत्य शुनकने मारकर अपने वंशज प्रद्योतको (राजदिया बृहद्रथ रिपुंजयके वंशजथा.

२४ पालक

२५ विशाखयूप

२६ राजक

२७ नन्दिवर्द्धन वा तक्षक (७) इसने [illegible] मालय प्रान्तसे आईहुई तक्षकजातिके [illegible] पनाग

तीसरा वंश.

२८ शेशनाग (शिशुनाग) (८)- विरूयात ताक वा नागजाति सीथिक एशियासे ईसासे ५५० छःसोवर्ष पहले आई जिस कालमें कि मारी वंशके उत्पन्न हुए टोगरमाके बेटोंने मिसर और युरोपपर चढाई की (देखो एजेकील वालने पिंकर्टनकी पुस्तक) और उसी समय भारतमें महावीर नामक बुद्धके चोबीसवें अवतार प्रगट हुए और शेशनागने आबू पर्वतपर जैनधर्मका प्रचार और पूजनका विस्तार प्रगट किया.

२९ कीऊक वा काकवर्ण-

३० क्षेमधर्मा

३१ क्षेत्रज्ञ

३२ विधिसार

३३ अजातशत्रु

३४ दर्भक

३५ अजय

३६ नन्दिवर्द्धन

३७ महानन्द (विख्यात) (९)

३८ समाप्त

चौथा वंश.

३९ चन्द्रमोरी वा चन्द्रगुप्त- यह ईसासे ३२० वर्ष पहले हुआ यह मकदूनियांके सिकन्दरका समसामयिक था.

४० वारिसार

४१ अशोकवर्द्धन- कहाजाताहै कि यह अशोक जैनधर्मका महान संरक्षक और चोबीसवें बुद्ध महावीरके क्रमानुयायी धर्माचार्योंका शिष्य था

४७ संजय
४८ शाक्य
४९ शुद्धोद
५० सांगल (लांगल) (हांगल)

५१ असमंजित वा (प्रसेनजित)
५२ रोमक (क्षुद्रक, (घ)
५३ सुरथ
५४ सुमित्र — श्रीमद्भागवतमें दियेहुए अन्तके नाम सुमित्रसे राजा जयसिंहके वंशवृक्ष और वंशसूचीका आरंभ होताहै सुमित्रको विक्रमादित्यका समसामयिक कहा गयाहै. यह राजपालकाभी समकालीन है.
+
+
+
+

मेवाडके राणाओंका वंश.

५९ महारथी - यह नाम राजा जयसिंहकी नामावलीमें सुमित्रके पीछे है.
६० अतिरथी
६१ अचलसेन
६२ कनकसेन } सम्वत २०० सन १४४में इसने सौराष्ट्रको विजय किया राणाके
६३ महामदनसेन } खानदानको दक्षिणमें स्थापित किया.
६४ सुदन्त
६५ विजय वा अजयसेन (४) जयसिंहने इसको नौशेरवां लिखाहै इसने सौराष्ट्रमें
६६ पद्मादित्य — विजयपुर वा विराटगढ बसाया, संभव है कि इसने सम्वत ३७५
६७ शिवादित्य — में वल्लभी सम्वत्का प्रचार किया.
६८ हरादित्य
६९ सूर्यादित्य
७० [illegible]ादित्य
७१ शिलादित्य - इसपर पारशीय[illegible] [illegible]ण किया, [illegible]की राजधानी [illegible] [illegible]और
७२ गोह - गुहादित्य [illegible] जंगलमें पलायमान होगया.
७३ नागादित्य - भांडेरका और यहींसे गहिलोतवंश कहलाया.
७४ भोगादित्य
७५ देवादित्य
७६ आशादित्य - } इसने मेवाडमें गिहोतोंकी प्रथम राजधानी आशापुर और आहड निर्माणकी
७७ कालभोज
७८ ग्रहादित्य
७९ वप्प वा वाप्पा - इसीने सम्वत ७७० सन ७१४ में नमोरियोसे चित्तौर लिया और रामचन्द्रसे लेकर यहांतक अस्सी पीढी हुई.

(यह नाम आशापुरके शिलालेखमें हैं)

तीसरा वंश.

४३ महाराज- कदाचित यह वही महाराज है जिसका [illegible]र्णन तारीख फरिश्तामें आयाहै.
४४ श्रीसेन
४५ महीपाल
४६ महाबली
४७ सरूपवती
४८ नेत्रसेन
४९ सुमुखधन
५० जैतमल
५१ कलंक
५२ कलमन
५३ सिरमर्दन
५४ जयवंग
५५ हरगूज
५६ हीरसेन
५७ आन्तिनय- अपने सेनिकमंत्रीको इसने अपना अधिकार देदिया.

चौथा वंश.

५८ धुंधसेन
५९ संघवज
६० महागंग
६१ नदजीवन
६२ उदय
६३ जेहुल
६४ अनन्द — राजा सुखवन्तके हाथसे इसकी मृत्यु हुई और फिर दिल्ली छीनली वहांसे विक्रमादित्यने उसको निकालदिया.

३९ चन्द्रमोरी वा चन्द्रगुप्त - यह ईसासे ३२० वर्ष पहले हुआ यह मकदूनियाके सिकन्दरका समसामयिक था.
४० वारिसार
४१ अशोकवर्द्धन - कहाजाताहै कि यह अशोक जैनधर्मका महान संरक्षक और चौबीसवें बुद्ध महावीरके क्रमानुयायी आचार्योंका शिष्य था
४२ सुयशा (१०)
४३ संगन
४४ शालिसूक
४५ सोमशर्मा
४६ शतधन्वा
४७ बृहद्रथ - मगधसे इसके निकलनेके साथही मोरी वंश पूर्ण होगया. अनुमान है कि उसी समय मोरियोंने मध्यभारतमें आकर धार और चित्तौरके राज्य ग्रहण कियेहों.

पांचवां वंश (शुंगवंश)

४८ अग्निमित्र (११)
४९ वसुमित्र (१२)
५० भद्रक
५१ पुलिन्द (१३)- इससे प्रगट है पुरानी जातियोंमेंसे भीलजातिने फिर राज प्राप्त कियाहो.
५२ घोष
५३ वज्रमित्र
५४ भागवत
५५ देवभूति

छठांवंश (कान्व वंश.)

५६ भूमित्र (१४) इसीके समयके निकट ईसासे ५६ वर्ष पहले विक्रमादित्य हुए.
५७ नारायण
५८ सुशर्मा

सातवां [illegible] ([illegible])

६० शान्तकर्ण (शातकर्णा)
६१ पूर्णमास
६२ लम्बोदर
६३ चिविलक (विकलनाम भागवतमें है.)
६४ मेघस्वाति (१६)
६५ अनिष्टकर्म
६६ हालेय (हाल) (वा शालिवाहन)
६७ तलक
६८ पुरीषभीरु
६९ सुनंदन
७० चकोर
७१ शिवस्वाति (नवमा)
७२ अरिन्दम
७३ गोमती (गोतमीपुत्र)
७४ पुरीमान (पुलुमाई)
७५ मेदाशिरा
७६ स्कन्द (शिवस्कन्द)
७७ विज्ञश्री (यज्ञश्री)
७८ विजय
७९ चन्द्रविज्ञ (चन्द्रश्री) (१७) } संभवहै कि यह मेवाडके राणाओंके प्रथम पुरुष बाप्पा रावलका समसामयिकहो जिसने ७[illegible] में मोरियोंसे चित्तौर लियाथा
८० सलोमधी (पुलोमन) } सलोमधी [illegible] बाप्पा रावलका समकालिक नहीं होसकता यहवंश ईस्वी सन् ३०० से पहलेही समाप्त होचुकाथा.

अनुवादककृत टिप्पणी.

१ इस वंशवृक्षमेंभी बहुत कुछ उलट फेर है हम यथामति शुद्ध करते हैं.
२ रामचन्द्रके बडे पुत्रका नाम कुश है लव नहीं.
(क) क्षेमधन्वाका देवानीक देवानीकका अनीह अनीहका पारिजात पारिजातका पुत्र वक्षस्थल है.
(ख) पुष्पका ध्रुवसंधि उसका सुदर्शन.
(ग) भानुका पुत्र दिवाकर है.
३ बाहुमान भानुमान वा बहमनको ईरानका राजा बहमन मानना टाडसाहबकी भूलहै.
(घ) क्षुद्रकके कनक उनके सुरथ हुए

४ इसका नौशेरवां मानना भ्रम है कारण कि नौशेरवांका [illegible]य सन ५३२ से आरंभहै और अजयसेन ३३२ में हुआ चन्द्रगुप्तका सम्वत् वल्लभीसम्वत् प्रतीत [illegible]है.
५ जन्मेजयसे जो यह वंशावली दीहै इस्से और भागवतकी वंशावलीसे बडा भेदहै एक वंशावली हमनें भूमिकामें दीहै यहां भागवतकी वंशावली लिखतेहैं. जन्मेजय, शतानीक, सहस्रानीक, अश्वमेधक, असीमकृष्ण, निमिचक्र, चित्ररथ, कविरथ, [illegible] [illegible]तीथ, नृचक्षु, सुखीनल, [illegible]प्लव, सुनय, मेधावी, नृपंजय, दूर्व, तिमि, बृहद्रथ, [illegible], दुर्दमन, वहीनर, दंडपाणि, निमि, क्षेमक;
६ जैन[illegible]पनेको बौद्धोंसे पृथक् मानते हैं. यह चन्द्रप्रभु जैनियोंके २३ वें तीर्थकरहैं.
७ नन्दि[illegible]का नाम तक्षक किसी पुराणमें नहीं पायाजाता.

८ पुराणोंमें यह नाम शिशुनाग है.
९ महानन्दका पुत्र महापद्म और इनका पुत्र सुमाल्य लिखा है.
१० भागवतमें सुयशाका पुत्र दशरथ [illegible]सका पुत्र संगत [illegible]
११ [illegible] इसके पिताका [illegible] [illegible]है.
१२ [illegible] अग्निमित्रके पुत्र सु[illegible]ष्ठका वेद लिखाहै.
१३ इसको नामार्थसे भीलजाति समझना भ्रमहै.
१४ इसके पिताकानाम वसुदेव लिखाहै.
१५ यह राजा सिमुकका उत्तराधिकारी था भागवतमें इसको बलिका भ्राता लिखाहै.
१६ मेघस्वातिका अटमान उसका अनिष्टकर्म.
१७ इसकी पूर्ति सन् ३०० में हो चुकीथी इससे यह बाप्पा रावलका समकालीन नहीं होसक्ता.

श्रीवेङ्कटेश्वरस्टीमप्रेस, खेतवाडी, मुंबई

